अख़्लाक़ी कहानियां

भाग - 2

अफ़ज़ल हुसैन एम०ए० एल०टी०

अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

प्यारे बच्चो!
तुमने कहानियां तो बहुत सी सुनी होंगी।
चांद-तारों की कहानियां,
भालू-बन्दरों की कहानियां आदि।
मां से, दादी से, बड़े भाई-बहनों से,
तुम कहानियां सुनते चले आ रहे हो।
कहानियों में,
तुम्हारी दिलचस्पी भी तो बहुत है।
तुम्हारी इस दिलचस्पी को,
ध्यान में रख कर तुम्हारे लिए,
प्यारी-कहानियों का,
यह छोटा-सा सैट तैयार किया गया है।
इन कहानियों से,
तुम्हारा दिल भी बहलेगा और तुम्हारी जानकारी भी बढ़ेगी।
ये कहानियां सच्चे किस्से हैं।
इनमें आदर्श जीवन की झलकियां हैं।
और
इनसानी खूबियों की खुशबू भी।
ये कहानियां केवल कहानियां नहीं,
हमारे लिए रहनुमा भी हैं।
प्यारे बच्चो!
इन कहानियों को पढ़ो
और
तुम खुद इन्सानी समाज के लिए रास्ता दिखाने वाला दीप बनो।
यही हमारी तमन्ना है।
खुदा तुम्हारी मदद करे।

क्या कहां

तालीम में दिलचस्पी	५
क़ुरआन का अदब	७
अपने हाथ से काम करना	८
बहादुरी	१०
सच्ची बात का असर	१२
सादा ज़िन्दगी	१४
जानवरों पर रहम	१६
वायदा पूरा करना	१८
उस्ताद का अदब	२०
यतीमों का ख़्याल	२२
ग़रीबों को खाना खिलाना	२४
मांगने से बचो	२६
इन्साफ़	२८
सब्र	३०
ईमानदारी	३१

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह रहमान, रहीम के नाम से

१

तालीम में दिलचस्पी

बहुत दिनों की बात है। प्यारे नबी (सल्ल०) दुनिया से जा चुके थे। सहाबा (रज़ि०) का समय भी ख़त्म हो चुका था। मुसलमानों में एक बहुत बड़े आलिम थे, उनका नाम था इमाम मालिक (रह०), वह मदीने में क़ुरआन और हदीस की तालीम देते थे। लड़के बहुत दूर-दूर से उनके पास पढ़ने आते थे।

एक दिन वह पढ़ा रहे थे। पढ़ने वालों में स्पेन के भी एक तालिबे इल्म बैठे थे। उनका नाम था यहया। वह दीनी तालीम को बहुत पसन्द करने थे। इतनी दूर से इमाम मालिक के पास दीनी तालीम हासिल करने के लिए आये थे। अभी पढ़ाई चल रही थी कि शोर हुआ- "हाथी! हाथी!"

अरब में हाथी नहीं होता था। वहां के लोगों के लिए यह एक अनोखी चीज़ थी। आवाज़ सुनते ही सारे लड़के बाहर निकल आये और हाथी देखने लगे। लेकिन यह्या उसी तरह अपनी जगह पर बैठे रहे। उनके उस्ताद ने कहा— "बेटे यह्या! तुम्हारे यहां स्पेन में भी तो हाथी नहीं होते, तुम क्यों नहीं गये, जाओ तुम भी हाथी देख आओ"

'अच्छे उस्ताद!' यह्या ने जवाब दिया, ''मैं अपना वतन छोड़कर आप के पास इल्म हासिल करने आया हूं, हाथी देखने के लिए उतनी दूर से यहां नहीं आया हूं''

अच्छे शागिर्द की ये बातें सुनकर इमाम मालिक बहुत ख़ुश हुए उन्होंने यह्या को दुआ दी और कहाः—

''तुम तो बहुत ही समझदार बेटे हो।''

उस्ताद के मुंह से यह बात कुछ इतने प्यार से निकली कि अल्लाह ने उसे कुबूल कर लिया और यह्या स्पेन के एक बड़े और बहुत ही समझदार आलिम हुए।

सवाल

१. इमाम मालिक (रह०) यह्या से क्यों ख़ुश हुए?
२. वह हाथी देखने क्यों नहीं गए?

२

क़ुरआन का अदब

महमूद एक बहुत मशहूर बादशाह हुआ है। वह ग़ज़नी का रहने वाला था। उसने कई वजहों से भारत पर भी सत्तरह हमले किये थे। उसकी ज़िंदगी का एक बहुत मशहूर किस्सा है कि एक रात वह सोने जा रहा था, इत्तिफ़ाक़ से ताक़ पर निगाह पड़ी, देखा तो क़ुरआन पाक रखा हुआ था।

अब क्या करे, अगर इधर पैर फैला कर सोता है तो पाक क़ुरआन की बे अदबी होती है, सोचा लाओ चारपाई की सिम्त बदल दूँ। उधर सिरहाना हो जाये फिर ठीक रहेगा। इसलिए चारपाई का रुख़ बदल दिया। अब सोने चला तो ख़्याल आया कि मेरे कमरे में अल्लाह का फ़र्मान रखा हुआ है और मैं उसे समझ कर पढ़ने और उस पर अमल करने के बजाय ग़ाफ़िल पड़ा सोऊँ। यह भला कैसे सही होगा। सोचा, लाओ उसे उठा कर पास वाले कमरे में रख आऊँ और फिर आराम करूँ।

इस ख़्याल का आना था कि बादशाह कांप उठा, सोचा यह कितनी बड़ी बे-अदबी है कि सिर्फ़ अपने आराम के लिए अल्लाह की किताब को अपने कमरे से हटा रहा हूँ।

इसी उलझन में बादशाह रह गया, न हटाते बनी, न सोते। सारी रात आंखों में काट दी।

३

अपने हाथ से काम करना

मुसलमानों के एक ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हुए हैं। वे बहुत ही नेक और सादे मिज़ाज वाले थे।

एक दिन उनके यहां एक मेहमान आया। वे चिराग़ की रोशनी में कुछ लिख रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से चिराग़ में तेल ख़त्म हो गया और वह थोड़ी ही देर में टिमटिमा कर बुझने लगा। मेहमान बोले:—

"आप फ़िक्र न करें, मैं अभी ठीक किये देता हूं।"

"मेहमान से ख़िदमत कराना ठीक नहीं है।"

ख़लीफ़ा ने जवाब दिया।

"अच्छा तो नौकर को जगाए देता हूं, वह उसे ठीक कर देगा" मेहमान ने कहा।

"नहीं, उस बेचारे को सोने दो, अभी-अभी तो सोया है। बे वजह ही इसे तक्लीफ़ होगी।" यह कह कर ख़लीफ़ा उठे और चिराग़ में तेल डाल लाये।

"आख़िर आप ही ने तकलीफ़ उठाई" मेहमान ने कहा।

"क्या हुआ?" ख़लीफ़ा ने जवाब दिया, "इसमें तकलीफ़ की

क्या बात है, जब मैं तेल डालने गया था, उस वक़्त भी उमर था और अब वापस आया हूं तो अब भी उमर ही हूँ।"

मेहमान उनकी यह बात सुनकर कोई जवाब न दे सका।

सवाल

१. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ कौन थे?
२. मेहमान से उनकी क्या बात चीत हुई?
३. उन्होंने मेहमान से ख़िदमत क्यों नहीं ली?
४. गुलाम को जगाने से क्यों मना किया?
५. तुम अपना कौन-कौन सा काम ख़ुद कर लेते हो?

४

बहादुरी

प्यारे नबी (सल्ल०) के ज़माने की बात है, वे हिजरत करके मदीने जा चुके थे, लेकिन दुश्मन वहां भी चैन से न रहने देते थे। एक साल दुश्मनों ने बहुत बड़ी फ़ौज तैयार की और मुसलमानों पर हमला करने के लिए चल पड़े। उधर मुसलमानों ने भी जंग की तैयारी शुरू की। मर्द, औरतें और बच्चे सब ही दीन पर न्यौछावर होना चाहते थे। सभी बढ़-बढ़ कर अपने आपको पेश करने लगे। लेकिन नबी (सल्ल०) ने बच्चों को यह कह कर वापस कर दिया कि अभी तुम बच्चे हो, जब बड़े हो जाओगे, उस समय जिहाद करना।

बच्चों में एक का नाम राफ़ेअ था, उसको प्यारे नबी (सल्ल०) ने यह कह कर वापस कर दिया कि "तुम्हारा क़द अभी छोटा है।"

राफ़ेअ को जिहाद में शामिल होने का बहुत शौक था। वह था भी बड़ा अक्लमन्द। फ़ौरन एक तरकीब सूझी। प्यारे नबी (सल्ल०) के सामने अपने पंजों के बल खड़ा हो गया और ऊंचा होकर कहने लगा, "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं तो बड़ा हूं, मैं अपनी तलवार से दुश्मनों को खत्म कर दूंगा।"

प्यारे नबी (सल्ल०) ने बच्चे का शौक देख कर उसे फौज में

भर्ती कर लिया। इतने में एक और लड़का जिसका नाम समुरा था, आगे बढ़ कर कहने लगा:—

"ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे भी फ़ौज में भर्ती कर लीजिए। लड़ाई तो ताक़त से होती है और मैं राफ़ेअ से ज़्यादा ताक़तवर हूं। क़द छोटा होने से क्या होता है, राफ़ेअ से कुश्ती करा के देख लीजिए।"

प्यारे नबी (सल्ल०) ने समुरा की यह बात मान ली। दोनों में कुश्ती हुई। समुरा ने राफ़ेअ को पछाड़ दिया। अब तो वह भी इस्लामी फ़ौज में भर्ती हो गया।

अल्लाह इन बहादुरों से राज़ी हो!

सवाल

१. ज़िहाद किसे कहते हैं?
२. तुमने भी बहादुरी का कोई काम किया हो तो बयान करो?

५

सच्ची बात का असर

सुलतान बायज़ीद तुर्कों का एक बहुत मशहूर बादशाह हुआ है। वह बहुत, बहादुर और इन्साफ़ पसन्द था। नमाज़ रोज़े का भी पाबन्द था, लेकिन नमाज़ जमाअत के साथ नहीं पढ़ता था। उसी के ज़माने का एक क़िस्सा है।

एक बार जज की अदालत में एक मुक़दमा पेश हुआ। उसमें एक फ़रीक़ की ओर से सुलतान खुद गवाह था। अदालत के जज मौलाना शम्सुद्दीन थे। वे रूस के रहने वाले थे और शरीअत के बहुत पाबन्द थे।

सुल्तान गवाही के लिए पेश हुआ। मौलाना ने उसकी गवाही क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया। सुलतान खुद भी इंसाफ पसंद था और जज की इन्साफ़ पसन्दी को भी जानता था, इसलिए उनके इस बर्ताव पर नाराज़ तो न हुआ, लेकिन इन्कार का सबब पूछा, मौलाना बोले:–

"शरीअत के मुताबिक़ उन लोगों की गवाही क़ुबूल नहीं होती, जो नमाज़ जमाअत से नहीं पढ़ते। अब आप खुद समझ सकते हैं। कि आपकी गवाही क्यों रद्द कर दी गई।"

सुलतान पर इस बात का बहुत असर पड़ा। उसके बाद वह बड़ी मेहनत से जमाअत की पाबन्दी करने लगा।

सवाल

१. सुलतान बायज़ीद कौन था?
२. इस्लामी अदालत ने उसकी गवाही क्यों न मानी?
३. जज और सुल्तान में क्या बातचीत हुई?
४. सुलतान ने जज की बात से क्या असर लिया?
५. जज की कौन सी ख़ूबी तुम्हें सबसे ज़्यादा पसन्द है?

६

सादा ज़िन्दगी

सुलतान नासिरुद्दीन हिन्दुस्तान का एक नेक और सादे मिज़ाज वाला बादशाह हुआ है। कहने को तो वह बादशाह था, लेकिन आम बादशाहों से उसका रहन-सहन बिल्कुल जुदा था। वह अपने निजी ख़र्च के लिए सरकारी ख़ज़ाने से एक पैसा न लेता। छः महीने में एक कुरआन पाक अपने हाथ से लिख लेता, इस तरह साल में दो कुरआन पाक तैयार हो जाते। उन्हीं के हदिए से साल भर तक अपना ख़र्च चलाता। कभी-कभी टोपियां बना कर भी कुछ पैसे हासिल कर लिया करता, इतनी थोड़ी आमदनी में ज़ाहिर है, कितनी सादा ज़िन्दगी गुज़रती होगी।

सुलतान की एक ही महारानी थी, वह भी बड़ी नेक और सादे मिज़ाज वाली थी। सुलतान ख़ुद मेहनत से कमाता। रानी अपने हाथ से खाना पकाती और इस प्रकार मियां-बीवी सादगी की ज़िन्दगी गुज़ारते।

एक दिन रानी खाना पका रही थी। इत्तिफ़ाक़ से तवे से रोटी उतारने में हाथ जल गया। बड़ी तकलीफ़ हुई। सुलतान की ख़िदमत में हाज़िर होकर दबी हुई आवाज़ में अर्ज़ किया:—

"अगर आप मेरी मदद के लिए एक नौकरानी रख देते तो बड़ी मेहरबानी होती।" सुलतान ने कहा:—

"बीवी! तुम तो जानती हो कि हमारी आमदनी बहुत कम है, उसमें नौकरानी रखने की गुंजाइश कहां है? सरकारी ख़ज़ाना जनता की अमानत है। उसी की भलाई और सुधार पर ख़र्च होना चाहिए। इसमें से तो हमें अपने ऊपर ख़र्च करने का कोई हक नहीं। नौकरानी कहाँ से रख लूँ?"

रानी यह जवाब सुनकर चुप हो गई और फिर नौकरानी रखने के लिए नहीं कहा।

सवाल

१. सुलतान ने रानी की माँग क्यों रद्द कर दी?
२. इस्लामी हुकूमत में सरकारी ख़ज़ाना किसका होता है?

७

जानवरों पर रहम

बहुत दिनों की बात है। शहर ग़ज़नी में एक आदमी रहता था, उसका नाम था सुबुकतगीन। वह था तो अपने क़बीले का सरदार परन्तु था वह ग़रीब। एक घोड़े के सिवा उसके पास कुछ न था। वह अपना ज़्यादा समय सैर-सपाटे तथा शिकार में गुज़ारता था।

एक दिन वह शिकार को ज़ा रहा था। रास्ते में उसे एक हिरनी और उसका बच्चा चरते हुए मिले। सुबुकतगीन ने घोड़े को ऐड़ लगा दी, और उनके पीछे तेज़ी से दौड़ाया। दोनों जान बचा कर भागे, लेकिन बच्चा तो बच्चा ही था, कितना तेज़ भाग सकता था? आख़िरकार सुबुकतगीन ने उसे पकड़ लिया और लेकर घर की ओर चल पड़ा।

हिरनी बेचारी ममता की मारी अपने बच्चे के लिए उसके पीछे होली। सबुकतगीन की नज़र हिरनी पर पड़ी। उसके दुःखी चहरे और ललचाती हुई निगाह को देखकर सुबुकतगीन को रहम आ गया और उसने बच्चे को छोड़ दिया। छूटते ही बच्चा छलांगें मारता अपनी मां के पास पहुंचा और दोनों ने ख़ुशी-ख़ुशी जंगल की

राह ली।

रात को सुबुकतगीन ने प्यारे नबी (सल्ल०) को ख़्वाब में देखा, उन्होंने फ़र्माया:–

"सुबुकतगीन! तुमने हिरनी बेचारी पर तरस खाया, तुम्हारा यह काम अल्लाह को बहुत पसन्द आया। तुम्हारा नाम बादशाहों की लिस्ट में लिख लिया गया है। अब तुम जल्द ही बादशाह हो जाओगे। लेकिन देखो हुकूमत पाने के बाद घमन्डी मत हो जाना। अपनी जनता के साथ इसी तरह का बर्ताव करना।"

इसके बाद सुबुकतगीन बादशाह हो गया। इस बात को उसने सारी ज़िन्दगी याद रखा और अपनी जनता के साथ हमेशा मुहब्बत और प्रेम का सुलूक किया।

सवाल

१. सुबुकतगीन ने हिरनी के बच्चे को क्यों छोड़ दिया?
२. सुबुकतगीन को बादशाह क्यों बनाया गया?
३. मुसलमान राजा को अपनी जनता के साथ कैसा सुलूक करना चाहिए?
४. अगर तुमने जानवरों के साथ हमदर्दी का सुलूक किया हो तो बताओ।

८

वायदा पूरा करना

एक बार की बात है, प्यारे नबी (सल्ल०) अभी नव-जवान ही थे। उस समय तक वह नबी नहीं हुए थे। उन दिनों वह कारोबार करते थे। उनके कारोबार के एक साथी अब्दुल्लाह थे। उनके साथ प्यारे नबी (सल्ल०) अक्सर कारोबार करते थे।

एक दिन उनसे किसी माल की बिक्री का कुछ मामला किया। बात कुछ तै हो चुकी थी, कुछ रह गई थी कि अब्दुल्लाह को किसी काम से जाना पड़ा। चलते समय वह कह गये कि आप यहीं ठहरे रहें, मैं वापस आकर बात पूरी करूँगा।

जाने के बाद अब्दुल्लाह भूल गये। तीन दिन तक उन्हें अपना वायदा याद न आया। तीसरे दिन जब याद आया तो वह दौड़े हुए उसी जगह पर आये, जहां दोनों में तीन दिन पहले बात-चीत हुई थी। आकर देखा तो आप (सल्ल०) उसी जगह इन्तिज़ार कर रहे थे।

अब्दुल्लाह तो खुद अपनी इस हरकत पर बहुत शर्मिन्दा हुए परन्तु आप (सल्ल०) के माथे पर बल भी न आया, बहुत ही नर्मी से इतना कहा:—

"अब्दुल्लाह तुमने मुझे बड़ा कष्ट दिया, तीन दिन से यहीं बैठा
-हारा इन्तिज़ार कर रहा हूं।"

वाल

. हमारे नबी (सल्ल०) नव जवानी में क्या करते थे?
. तीन दिन तक आप (सल्ल०) एक जगह पर क्यों ठहरे रहे?
. तुम अपने वायदों का कितना ख़्याल रखते हो?
. इस कहानी से तुमने क्या सबक़ लिया?

१

उस्ताद का अदब

हारून रशीद मुसलमानों का एक बहुत बड़ा बादशाह हु
है। उसके लड़के का नाम मामून था। मामून की परवरिश ब
लाड़ प्यार से हुई थी। एक तो शाहज़ादा, दूसरे हद से ज़्या
लाड़-प्यार, नतीजा यह हुआ कि मामून बहुत नट-खट हो गया
शाही महल के सारे नौकर-चाकर उसकी शरारत से परेशान थे
बड़े-बड़ों को पीट देता। सब चुपचाप उसकी मार-पीट सहन क
लेते, जिससे वह और ज़्यादा बिगड़ गया। किसी की परवाह न
करता था। डर तो उसे था ही नहीं। जब देखो तोड़-फोड़ में ल
हुआ।

मामून जब ज़रा बड़ा हुआ, उसकी तालीम के लिए ए
उस्ताद रख दिये गये। उस्ताद पढ़ाने के लिए शाही महल गये
मामून को आवाज़ दी, लेकिन वह खेल में मस्त था, उस्ताद क
आवाज़ पर बाहर न निकला। नौकरों से बुलवाया, मगर मामून
परवाह न की। नौकरों ने आकर शिकायत की कि वह किसी क
नहीं सुनता, हम लोगों को मार-पीट दिया करता है। क्या व
ख़ामोशी से सहन कर लेते हैं?

उस्ताद मामून की बद-दिमागी समझ गये, किसी तरह उसको हर बुलाया। जब वह आ गया तो सात बेत गिन कर रसीद ये। मामून बिलबिला उठा, आज तक उसने किसी की मार सहन हीं की थी, लेकिन उस्ताद के अदब से उफ़ भी नहीं की। आँसू हा कर चुप हो गया।

इतने में उधर से वज़ीर आ निकला। मामून अदब से चुपका ठा पढ़ता रहा, जब वज़ीर चला गया तो उस्ताद ने कहा:–

"मामून! तुमने वज़ीर से मार की शिकायत नहीं की?"

मामून ने कहा:– "अच्छे उस्ताद! आपने मेरी भलाई के लिए ारा था, मैं किसी से शिकायत क्यों करता! वज़ीर तो भला वज़ीर ं, खुद मेरे बाप जो बादशाह हैं, अगर वह आते या मुझसे पूछते, ब भी मैं शिकायत न करता।"

सवाल

१. मामून ने उस्ताद की मार क्यों सह ली?
२. तुम्हारे साथ अगर इस तरह का सलूक किया जाये तो तुम क्या करोगे?

१०

यतीमों का ख़्याल

तुमने हातिम ताई का नाम तो सुना होगा। ख़ैरात और दान करने में उनका नाम मशहूर है। उन्हीं के क़बीले में एक बहुत बड़े अल्लाह वाले बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, उनका नाम था दाऊद ताई।

बहुत दिनों से दाऊद ताई को गोश्त नहीं मिला था। एक दिन गोश्त खाने को उनका जी चाहा। उन्होंने गोश्त मंगाया। मामा ने बड़े मज़े का चटपटा सालन पकाया, जब खाना सामने आया तो दाऊद ताई ने मुहल्ले के कुछ यतीम बच्चों का नाम लेकर पूछा:-

"इन यतीमों का क्या हाल है?"

मामा बोली:- "अभी तक तो ये बेचारे ग़रीबी और तंगी के दुख उठा रहे हैं, देखिए कब तक उन के दिन फिरते हैं।"

"तब तो उन्हें गोश्त न मिलता होगा।" दाऊद ने कहा, "अच्छा ले जाओ, यह गोश्त इन ग़रीब बच्चों को खिला दो।"

"मियां! आपने भी तो बहुत दिनों से गोश्त नहीं खाया है।" मामा ने कहा, "आज आप ही खा लें किसी और दिन उन बच्चों को खिला दिया जायेगा।"

"नहीं! मैं नहीं खाऊंगा" बुज़ुर्ग ने जवाब दिया। "तुम ले

जाकर उन्हीं को खिला दो। उनका खाया हुआ अल्लाह के पास पहुंचेगा और मेरा खाया हुआ तो मिट्टी हो जायेगा।"

यह कह कर उन्होंने पका-पकाया गोश्त यतीमों को भिजवा दिया और जी चाहने के बावजूद खुद न खाया।

सवाल

१. हातिम ताई कौन थे?
२. दाऊद ताई के बारे में तुम क्या जानते हो?
३. क्या तुम्हारे मुहल्ले में कुछ यतीम हैं? तुम उनके साथ कैसा सुलूक करते हो?

११

ग़रीबों को खाना खिलाना

हज़रत उमर (रज़ि०) के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) ग़रीबों का बड़ा ख़्याल रखते थे। किसी ग़रीब को शरीक किये बिना खाना नहीं खाते थे।

एक बार उनका जी चाहा कि मछली खायें। मछली मंगाई गई और उनकी बीवी सफ़िया ने बड़ी मज़ेदार मछली तैयार की। दस्तरख़्वान पर खाना चुन दिया गया। इतने में बाहर से एक फ़कीर की आवाज़ आई। उन्होंने बीवी से कहा "खाना फ़कीर को दे दो।"

एक बार लोगों ने उनकी बीवी को मलामत की कि तुम अच्छी तरह उनकी ख़िदमत नहीं करती हो। वह बोलीं:– "क्या करूँ उनके लिए मेहनत से खाना तैयार करती हूं, परन्तु वह किसी ग़रीब को खिला देते हैं।"

उनको पेट भर खाना खिलाने के लिए बीवी ने यह तरकीब की कि उन फ़कीरों और ग़रीबों से, जो उनके रास्ते में बैठा करते थे, कहला भेजा कि अब उनके रास्ते में न बैठा करो, अगर वह तुमको घर से भी बुलायें तो मत आया करो।

एक बार वह मस्जिद से नमाज़ पढ़कर बाहर निकले तो रास्ते

में कोई फकीर नज़र न आया, उन्हें उनके घरों से बुला भेजा, मगर वे लोग नहीं आये। ग़रीब को शरीक किये बिना वे खाते कब थे। इसलिए उस रात उन्होंने भी खाना नहीं खाया और भूखे ही सो रहे।

सवाल

१. हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) कौन थे?
२. उनकी बीवी खाना क्यों अच्छा पकाती थीं?
३. उनकी बीवी ने ग़रीबों को क्यों मना कर दिया?
४. हज़रत अब्दुल्लाह ने खाना क्यों नहीं खाया?
५. तुमने इस कहानी से क्या सबक़ लिया?

१२

माँगने से बचो

प्यारे नबी (सल्ल०) अल्लाह के प्यारे बन्दे थे। इंसानों को सीधी राह बताने के लिए भेजे गये थे। हुज़ूर (सल्ल०) ने इंसानों की भलाई के लिए बड़ी तकलीफ़ उठाई। बिना कुछ लिए इतना बड़ा एहसान किया, फिर भी नादानों ने आप की मेहनत से फायदा उठाने के बजाए आप (सल्ल०) के रास्ते में रोड़े अटकाये। तरह-तरह से परेशान किया, जान तक लेने पर तुल गये। वतन से निकाल दिया और इसी पर बस नहीं किया, बल्कि हिजरत के बाद भी तंग करते रहे।

एक बार इन नासमझों ने बहुत बड़ी फ़ौज तैयार करके मदीने पर धावा बोल दिया। प्यारे नबी (सल्ल०) और आपके अच्छे साथियों ने बचाव के लिए कुर्बानियां दीं। छोटे-छोटे लड़के भी अल्लाह के दीन पर मर मिटने के लिए तैयार थे। कुछ को प्यारे नबी (सल्ल०) ने जिहाद में शरीक होने की इजाज़त दी, परन्तु कुछ को कम उम्र होने के सबब रोक दिया। उनमें एक अबू सईद (रज़ि०) थे। उनके अब्बा ने भी सिफ़ारिश की और कहा:— "हुज़ूर! इसका जिस्म ताक़तवर और हड्डियां मोटी हैं, आप उम्र पर न जायें, इसे फ़ौज में भर्ती कर लें।"

लेकिन प्यारे नबी (सल्ल०) ने इंकार कर दिया। उस बच्चे को बड़ा अफ़सोस हुआ। जंग हुई। अल्लाह की मदद से मुसलमान जीत तो गये, मगर बड़े-बड़े सहाबा शहीद हो गये। जान का काफ़ी नुक़सान हुआ। अबू सईद (रज़ि०) के वालिद साहब भी उसी जंग में शहीद हो गये।

सहाबा (रज़ि०) के पास दौलत पहले ही से न थी और जो कुछ थी, सब अल्लाह की राह में लग चुकी थी। अबू सईद (रज़ि०) के घर भी कुछ न था। एक तो कम उम्र, घर में खाने को नहीं, बाहर कोई कमाने वाला नहीं। बड़ी परेशानी में पड़ गये। अल्लाह और रसूल के सिवा उनका और कौन सहारा था।

इसलिए प्यारे नबी (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुए। चाहते थे कि घर का हाल बता कर हुज़ूर (सल्ल०) से कुछ मदद हासिल करें। उन की सूरत देखते ही हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़र्माया:–

"जो सब्र चाहता है, अल्लाह उसे सब्र अता कर देता है, जो पाक होना चाहता है, अल्लाह उसे पाक बना देता है और जो खुशहाली चाहता है अल्लाह उसे खुशहाल कर देता है।"

हुज़ूर (सल्ल०) की ज़ुबान से यह बात सुननी थी कि अबू सईद (रज़ि०) का इरादा बदल गया। उन्होंने हुज़ूर से कुछ न मांगा और चुपके से वापस आ गये।

अल्लाह उनसे बहुत खुश हुआ। उन्हें कम उम्री ही में इतना ज्यादा इल्म दिया कि उन जैसे आलिम बहुत कम हुये हैं।

सवाल

१. अबू सईद (रज़ि०) जिहाद में क्यों नहीं लिये गयें?
२. बाप ने बेटे की सिफ़ारिश क्यों की?
३. अबू सईद (रज़ि०)-हुज़ूर के पास क्यों गये थे?
४. हुज़ूर (सल्ल०) की बातों से उन्होंने क्या असर लिया?
५. अल्लाह ने उन्हें क्या बदला दिया?

१३

इन्साफ़

बहुत दिनों की बात है, एक मुसलमान बादशाह दिल्ली में हुकूमत करता था। उसका नाम मुहम्मद तुग़लक था। वह बहुत समझदार, दूरअन्देश और इन्साफ़ पसन्द था। एक बार वह कहीं गश्त लगा रहा था। रास्ते में उसे दो बच्चे लड़ते हुए दिखाई दिये। एक बच्चा अमीर का था, एक ग़रीब का, अमीर बच्चा डांट रहा था और ग़रीब बच्चा खड़ा रो रहा था।

बादशाह ने समझा कि अमीर बच्चे ने ग़रीब को मारा होगा। इसलिए तंबीह के लिए उसके कुछ छड़ियां रसीद कर दीं, हालांकि कुसूर ग़रीब बच्चे का था। अमीर बच्चे ने मारा नहीं था। ग़रीब बच्चा केवल इस डर से रोने लगा था कि कहीं अपने कुसूर के सबब पिट न जाये।

मुहम्मद तुग़लक की हुकूमत में जनता को बादशाह के खिलाफ़ मुक़दमा दायर करने तक का हक़ था। अमीर लड़के ने बादशाह के खिलाफ़ जज की अदालत में मुक़दमा चला दिया। बादशाह पर जुर्म साबित हो गया। जज ने फैसला सुना दिया कि बादशाह पर जुर्म साबित है, उसे सज़ा भुगतने के लिए तैयार हो

जाना चाहिए।

बादशाह सज़ा भुगतने के लिए तैयार हो गया और लड़के को दरबारे आम में बुला कर वही छड़ी दी और कहा कि तुम मुझ से अपना बदला ले लो।

लड़का पहले तो झिझका, मगर जब बादशाह ने उसे कसम दिलाई तो वह तैयार हो गया। दरबारे आम में सब के सामने लड़के ने बादशाह के इक्कीस छड़ियां लगाईं। एक बार तो हाथ ऐसा पड़ा कि बादशाह की टोपी नीचे गिर गई, परन्तु उसने बहुत ही ख़ुशी ख़ुशी यह सज़ा सहन की।

सारे दरबारी उसके इन्साफ़ को देखकर दंग रह गये।

सवाल

१. मुहम्मद तुग़लक कौन था?
२. बच्चे ने उसके ख़िलाफ़ मुक़दमा क्यों दायर कर दिया?
३. बादशाह ने सज़ा क्यों सहन की?
४. इन्साफ़ क्या है? उसके लिए बादशाह ने क्या कीमत अदा की?

१४

सब्र

हज़रत सईद (रज़ि०) एक सहाबी थे। एक बार एक औरत ने उन पर एक घर के सिलसिले में दावा किया। घर हक़ीक़त में उन्हीं का था। औरत का दावा झूठा था। उन्होंने रोक-टोक नहीं की और घर उस औरत को ले लेने दिया, परन्तु इतना कहा:—

"ऐ अल्लाह! अगर यह औरत झूठी है तो इसको अन्धा कर दे और इसी घर में इसकी क़ब्र बना।"

अल्लाह ने उनकी बद-दुआ (शाप) सुन ली। उस औरत ने ज़बरदस्ती तो मकान पर क़ब्ज़ा किया ही था, कुछ दिनों के बाद अन्धी हो गई। दीवार पकड़ कर चलती और कहती मुझ पर सईद की बद्दुआ पड़ गई।

एक दिन वह उठी, आंखों से दिखाई देता नहीं था। टटोल-टटोल कर चलती थी। उस घर में एक कुँआ था। वह उसी कुँऐं में गिर पड़ी, आख़िर वही कुँआ उसकी क़ब्र बन गया।

सवाल

१. सब्र का फल कैसा होता है?

१५

ईमानदारी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि०) एक बहुत मशहूर ख़लीफ़ा हुए हैं। आप सरकारी ख़ज़ाने को जनता की अमानत समझते थे और उसकी बड़ी हिफ़ाज़त करते थे एक दिन सरकारी ख़ज़ाने में बहुत से सेब आये, आप दस्तूर के मुताबिक़ उनको लोगों में बाँट रहे थे, इतने में आपका छोटा बच्चा इधर आ निकला। वह अभी नासमझ था, उसे क्या पता कि ये सेब किस के हैं। अपने अब्बा मियां को बाँटते देखा, समझा हमारे होंगे। एक सेब उठा कर खाने चला।

सेब तो सरकारी थे और सरकारी चीज़ पर सारे लोगों का हक़ होता है। ख़लीफ़ा भला अपने बच्चे को क्यों लेने देते। यह तो जनता के माल में ख़िनायत होती, इसलिए उन्होंने बच्चे से सेब ले लिया। बच्चा रोने लगा। आपने बहलाया मगर बच्चा रोता हुआ अन्दर चला गया और अपनी मम्मी से शिकायत कर दी। मां ने बेटे के आंसू पोंछे और बाज़ार से सेब मंगा कर बहला दिया।

ख़लीफ़ा जब अन्दर आये तो उन्हें सेब की ख़ुशबू मालूम हुई। बीवी से पूछा कि घर में कोई सरकारी सेब तो नहीं आया है!

बीवी ने कहा:– "सरकारी सेब तो नहीं, हाँ मैंने बाज़ार से सेब मंगा कर बच्चे को खिलाया है। आप ने इससे सेब ले लिया था, वह रोता हुआ मेरे पास आया। किसी तरह बहल नहीं रहा था, मैंने बाज़ार से मंगा कर बहला दिया।"

उन्होंने कहा:– "क्या करता सेब सरकारी ख़ज़ाने के थे, मैंने बच्चे से सेब इसलिए छीन लिया था कि एक सेब के लिए कहीं अल्लाह के यहां बे-ईमान न ठहरूँ।"

ख़लीफ़ा की इस बात पर उनकी बीवी ख़ामोश हो गई।

सवाल

१. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ कौन थे?
२. वे सेब क्यों बाँट रहे थे?
३. उन्होंने अपने बच्चे के हाथ से सेब क्यों ले लिया?
४. अमानत किसे कहते हैं?